Lecture Series No:- 50.

Online class
Date - 23/12/2020
Day - [illegible]
Time - 10 to 10:50 A.M

TOPIC,

Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A Part - I
Paper - II (H.)
A.N.D. College Shahpur Patory.
Samastipur.

(1) Possibility

Ans:- काँट के दर्शन की मुख्य समस्या ज्ञान की समस्या है, अर्थात् ज्ञान क्या है, और ज्ञान की प्राप्ति किस प्रकार सम्भव है? मानव चिंतन की परिसीमा क्या है, उन्होंने इन्हीं प्रश्नों का अपने दर्शन में उत्तर दिया है। इन प्रश्नों के उत्तर में कुछ निर्णय निषेधात्मक होते हैं जबकि कुछ स्वीकारात्मक होते हैं। किन्तु इस विषय में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि विश्लेषणात्मक निर्णय में जो कुछ किसी के विषय में कहा जाता है वह उसके उद्देश्य में पूर्व से ही विद्यमान होता है, अर्थात् विश्लेषणात्मक निर्णय से तात्पर्य उस निर्णय

P.T.O.

से होता है। जिसमें विधेय उद्देश्य के विषय में कोई नई बात नहीं कहता अपितु ऐसी बात कहता है जो आधार वाक्यों में पहले से ही कही होती है, इसके अतिरिक्त दूसरे प्रकार के निर्णय संश्लेषणात्मक होते हैं जिनमें विधेय के द्वारा उद्देश्य के विषय में किसी नयी बात का उद्घाटन किया है, यथा - शरीर एक बुद्धि को प्राप्त होने वाली वस्तु है, यदि इसको ज्ञान द्वारा प्रमाणित किया जाये तब ~~यह~~ यह निर्णय संश्लेषणात्मक नहीं कही जा सकती

अर्थात् इन्हें विज्ञान का निर्णय नहीं कहा जा सकता। क्योंकि अनिवार्यता और सार्वभौमिकता इनकी संवेदना और

प्रत्यक्षीकरण में नहीं अपितु प्रज्ञा द्वारा विचार के स्रोत में है और क्योंकि हम उन्हें अनुभव के बिना जानते हैं इस रूप में ये अनुभव पूर्व हैं। जैसे तीन भुजाओं वाले त्रिभुज का तात्पर्य दो समकोण से होता है तो यह सार्व सत्य है कि जो सदैव एक सा है अतः (एवं) यह सत्य होंगे निर्णय निश्चय में गणित ज्यामिति आदि के भांति के विषय विषय तथा विभिन्न विज्ञानों के निर्णय संश्लेषणात्मक होते हैं।

इस प्रकार कान्ट ने अपने ज्ञान के सिद्धान्त में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि हमारे ज्ञानों का कितना अंश इन्द्रियाँ अनुभव द्वारा प्राप्त होता है और कितना अनुभव पूर्व का होता है।

अतः स्पष्ट है तात्पर्य है कि Kant ने अपने ज्ञान सिद्धान्त में etc.

END